STAR PLAY SCHOOL

Dear Parents

Today's Home Work Assignment

👉 **EVS**

Learn L-1

👉 **HINDI**

पाठ -2 कठिन शब्द कापी में लिखो।

एक थी चींटी। चींटियों की रानी। वह बहुत ही मेहनती थी। वह एक उपवन में बिल बनाकर रहती थी। उसके साथ और भी चींटियाँ रहती थीं। सभी चींटियाँ मिल-जुलकर रहतीं और खूब काम करतीं। उसी उपवन में एक टिड्डा भी रहता था। वह दिन-भर उछल-कूद करता और चींटियों का मजाक उड़ाता था। पर चींटियाँ उसकी किसी बात का बुरा नहीं मानती थीं।

एक बार गरमी का मौसम था। फसलें कट चुकी थीं, इसीलिए खेतों में काफी अनाज इधर-उधर बिखरा पड़ा था। चींटियाँ वर्षा ऋतु आने से पहले अपने बच्चों के लिए अनाज इकट्ठा करने में लगी हुई थीं। टिड्डा उनका मज़ाक बनाने लगा। तब रानी चींटी ने टिड्डे को समझाते हुए कहा–"टिड्डे भैया! तुम भी अपने लिए कुछ इकट्ठा करके रख लो, वरना बरसात में कैसे निर्वाह करोगे?" टिड्डे ने हँसकर कहा–"चींटी बहन! तुम किसलिए हो?" यह कहकर टिड्डा उछलता-कूदता वहाँ से चला गया।

अध्यापक संकेत : छात्रों से पहले बातचीत के माध्यम से कहानी कहिए। अपनी बातचीत में उन शब्दों का प्रयोग कीजिए, जो शब्दार्थ के रूप में दिए हैं। अब उन्हें पढ़ाना शुरू कीजिए।

शब्द-अर्थ : उपवन – बगीचा • बिल – चींटियों का घर • मज़ाक – हँसी-ठिठोली
निर्वाह – गुज़ारा करना

एक दिन आकाश में काले-काले बादल छा गए और मूसलाधार बरसात होने लगी। कुछ ही देर में चारों तरफ़ पानी भर गया। चींटियाँ तो अपने-अपने घरों में घुस गईं, पर टिड्डे का तो घर ही नहीं था। वह परेशान होने लगा कि वह किधर जाए। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। तभी उसे रानी चींटी का ध्यान आया। वह रानी चींटी के घर गया और उसका दरवाज़ा खटखटाया।

रानी चींटी ने दरवाज़ा खोला तो देखा, टिड्डा पूरा भीग गया है और ठंड से काँप रहा है। टिड्डा बोला–"चींटी बहन! मैं बिलकुल भीग गया हूँ और मुझे ठंड भी लग रही है। क्या तुम मुझे अपने घर में थोड़ी-सी जगह दोगी? मैं बरसात बंद होते ही चला जाऊँगा।"

रानी चींटी ने उसे आदर के साथ अंदर बुलाया। बाहर बरसात और ज़ोर से होने लगी। टिड्डा भूख के मारे बेहाल हो रहा था। चींटी ने जब उसकी दशा देखी, तो उसे उस पर दया आई। वह समझ गई कि टिड्डे को बहुत भूख लगी है। उसने उसे बड़े प्यार से भोजन खिलाया।

टिड्डे को अपने व्यवहार पर शर्म आने लगी। उसने चींटी से कहा–"बहन! मुझे क्षमा कर दो। आज तुमने मेरी आँखें खोल दी हैं। मैं अब समझ गया हूँ कि कभी आलस्य नहीं करना चाहिए। यदि उस दिन मैंने तुम्हारी बात मान ली होती, तो आज मुझे भी भूखा नहीं रहना पड़ता। आज से मैं भी अपने भविष्य के बारे में सोचूँगा। अपना घर बनाऊँगा और अनाज इकट्ठा करूँगा। इसके साथ-साथ अपने बच्चों को भी मेहनत करना सिखाऊँगा।" टिड्डे की बात सुनकर रानी चींटी बहुत खुश हुई।

उसके बाद सचमुच टिड्डा बदल गया। अब वह मौज़-मस्ती के साथ-साथ मेहनत भी करने लगा।

शब्द-अर्थ : मूसलाधार – बहुत तेज़ • बेहाल – बुरा हाल
व्यवहार – आचरण • आलस्य – सुस्ती

मुहावरा : आँखें खोलना – ज्ञान होना